राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रज्ञा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करणः नई दिल्ली व पाली राज. 15 सितंबर 2011 - 21 सितंबर 2011, वर्ष : 8, अंक : 42,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्कः 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in

www.facebook.com/ shreeshanidham

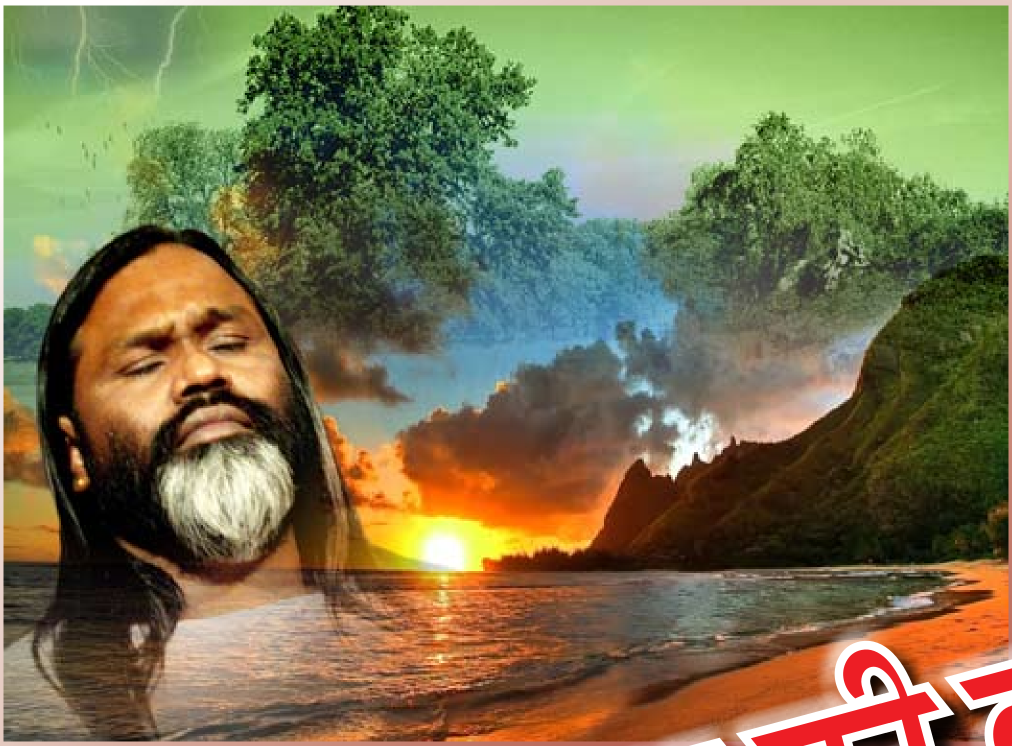

दाती संदेश

जब प्रभु की कृपा होती है तभी मिलते हैं सद्गुरु

मित्रो, प्रभु की कृपा से जब जीव को मानव शरीर प्राप्त होता है तब उसे भव सागर से पार उतरने का एक सुनहरा अवसर स्वतः उपलब्ध हो जाता है। मानव शरीर में जीव परमात्मा की भक्ति करके जन्म-मरण के भवचक्र से आसानी से मुक्त हो सकता है। सामान्य रूप से ऐसा समझा जाता है कि जो लोग भक्ति कर रहे हैं, उनमें अधिकतर कमजोर लोग या छोटे ओहदे के व्यक्ति होते हैं। लेकिन यह एक भ्रम हैं। क्योंकि जिनके पास मिटने की क्षमता है, वे ही भक्ति कर सकेंगे, जितना हम मिटेंगे, उतने ही हमारे भीतर वाले परमात्मा को रूप लेने का अवसर मिलेगा। भक्ति अपने आप को मिटाने वाली विधा है।

इसलिए जैसे-जैसे भक्ति जीवन में उतरेगी, हमें अपने भीतर उतरने में सुविधा होगी। मन को शांत करने में हमें सहायता मिलेगी। अभी मन मालिक है और शरीर गुलाम। लेकिन भक्ति के उतरते ही परमात्मा प्रकट होने लगता है और ईश्वर की अनुभूति के सामने मन गौण हो जाता है। उस समय मनुष्य का मुखर मन मौन हो जाता है।

याद रहे, हमारे मन के मौन होते ही हमारी सारी व्यग्रता शांत हो जाती है। हमारी सारी मौज-मस्ती, धूमधाम मचाने की प्रवृत्ति भौतिक सफलताओं के बाद भी हमें उत्तेजित नहीं कर पाएगी, हमें शांत रखेगी, तब प्रकाश ही प्रकाश फैल जाएगा अंतरतम में और इसी प्रकाश को आभ्यंतरिक उत्सव कहा गया है। जब हर काम में आनंद आने लगे तो फिर जिंदगी के अर्थ ही बदल जाते हैं। हमारे प्राचीन मनीषियों ने त्रयतापों से मुक्त होने के लिए मनुष्य को उपदेश दिया है। क्योंकि केवल मनुष्य ही त्रयतापों से बचने का उपाय कर सकता है। अन्य प्राणियों को तो यह क्षमता ही नहीं मिली है कि वे कोई भी कर्म कर पाएं। वे तो पूर्वकृत कर्मों के फलों को ही भोगने के लिए विवश होते हैं। लेकिन मनुष्य यदि चाहे तो कोई भी कर्म संपादित कर सकता है। यहां तक की कर्मबंधन से छुटकारा पाने का उपाय करके वह दैहिक, दैविक व भौतिक तापों से मुक्त हो सकता है। लेकिन मोह-ममता की बेड़ियों में जकड़ा मनुष्य अपने मुक्ति का उपाय करने के बारे में सोच भी नहीं सकता।

हमारे महापुरुषों ने मोह-माया की बेड़ी काटने का एक बड़ा ही सरल उपाय बताया है कि सनातन-गुरु परंपरा से प्राप्त होने वाले उपायों का सहारा लेकर आभ्यंतरिक साधना की जाए। आभ्यंतरिक साधना करने से साधक को वास्तविकता का बोध हो जाता है। उसके बाद मनुष्य का यह विश्वास दृढ़ हुए बिना न रहेगा कि जितने भी सांसारिक संबंध हैं, स्वार्थ-केंद्रित हैं। याद रहे, जब सर्वशक्तिमान प्रभु की कृपा होती है तभी सद्गुरु मिलते हैं और उनकी अनुकंपा से वास्तविकता का बोध होता है। प्रभु की कृपा के लिए आध्यात्मिक साधना करनी पड़ती है। इससे आत्मबल मिलता है। इसी से प्रभु की दया का बोध होता है। आध्यात्मिक साधना से द्रवीभूत होकर चित्त की वृत्तियों का ईश्वर की ओर केंद्रित होना ही भक्ति कहलाती है।

भक्ति आ जाने से भक्त के अंदर श्रद्धा, अनुरक्ति, समर्पण आदि सभी भाव स्वतः आ जाते हैं। इन सभी भावों के मूल में प्रेम किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है। ऋग्वेद संहिता में कहा गया है कि जैसे गंगा आदि बड़ी नदियां समुद्र की ओर दौड़ती हुई उसमें विलीन हो जाती हैं, वैसे ही भगवद्भक्त के मन की सभी वृतियां परमेश्वर की ओर जाती हुई तदाकार होती हुई उसमें विलीन हो जाती हैं। भक्ति के अंतर्गत ईश्वर की महत्ता स्वीकृत है। भक्ति दो प्रकार की मानी गई है - वैधी तथा रागानुगा। वैधी भक्ति दुश्कर है, क्योंकि उसमें विधि-विधानों का विशेष महत्व है। ये विधि-विधान दु:साध्य हैं। इसके विपरीत रागानुगा भक्ति सहज, सरल तथा सुलभ है। तुलसी के अनुसार भगवान की प्रार्थना ही सांसारिक दुखों से छुटकारा पाने की अचूक दवा है।

प्रभु को ध्यान में रखते हुए सभी कार्यों को करते रहने से मनुष्य स्वयं को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करता रहता है। इस संसार को प्रभु का साकार रूप समझकर पूर्ण जिम्मेदारियों के साथ अपने कार्यों को करते हुए अपना जीवन यापन करना चाहिए कि वे प्रभु ही इस जगत के एकमात्र मालिक हैं और मैं उनका एक छोटा सा सेवक हूं। ऐसा विचार मन में जागृत हो कि हरहाल में प्रभु के आदेशों का पालन करता हुआ अपना जीवन जिया जाए। इस संसार में आकर मनुष्य को अपने आपको मालिक समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए। इसलिए इस जगत की एक-एक वस्तु ईश्वर की बनायी हुई है। वे ही इस प्रकृति की रचना करने वाले हैं। फिर वे ही इस प्रकृति की रचना को क्षण भर में नष्ट कर सकते हैं और क्षण भर में एक नयी रचना वे पुनः नयी दुनिया को बसा सकते हैं।

शेष पेज 14 पर

व्रत-त्यौहार

17 सितंबर से 23 सितंबर 11 तक
(आश्विन कृष्ण पक्ष पंचमी से दशमी तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
17	शनि	पंचमी	भरणी	वृष	पंचमी का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा
18	रवि	षष्ठी	कृतिका	वृष	षष्ठी का श्राद्ध
19	सोम	सप्तमी	रोहिणी	वृष	सप्तमी का श्राद्ध
20	मंगल	सप्तमी	मृग.	मिथुन	जीवितपुत्रिका व्रत, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, अष्टमी का श्राद्ध
21	बुध	अष्टमी	आर्द्रा	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ नवमी, श्राद्ध नवमी
22	गुरु	नवमी	पुन.	कर्क	दशमी का श्राद्ध
23	शुक्र	दशमी	पुष्य	कर्क	इंदिरा एकादशी व्रत (स्मार्त) श्राद्ध एकादशी

आर्थिक तंगी व पति की बेरुखी से घबरा गयी हूं। क्या मैं आगे पढ़ने या नौकरी पाने की तमन्ना पूरी कर सकती हूं? मेरी और मेरी पति की कुंडली देखकर उचित उपाय बताएं जिससे मेरी परेशानी दूर हो। मेरा धीरज जवाब देता जा रहा है, दांपत्य जीवन में भी खटास बढ़ती जा रही है। कृपया मेरी मदद करें।

- मनजीत

आपका मीन लग्न है व तुला राशि है। इस समय आपको बुध की महादशा में मंगल की अंतरदशा है। आप का समय बहुत अच्छा है। 15 नवंबर के बाद से आपके गोचर की स्थिति अच्छी हो गयी है। आप धैर्य से काम लें। भाग्य आपके साथ है। आपके पतिदेव का सिंह लग्न है व कर्क राशि है। इस समय इन्हें शुक्र की महादशा में बुध की अंतर्दशा है। आप आगे भी पढ़ सकती हैं। आपको नवंबर के बाद से ही नौकरी मिलने के योग बन गये हैं। आप अपने पतिदेव से विवाद न करे। उनकी बेरुखी दूर करने के लिए आपको गुरुवार का व्रत करना चाहिए। बुध व शनि के मंत्रों का जप करें।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सह बुधाय नमः॥

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सह शनैश्चराय नमः॥

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नामः ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

श्व-स्छ्ड्ढद्य- ह्यद्धड्डठ्ठद्बस्न.द्धड्डद्वञ्चद्दद्धड्डद्बद्य.ष्शद्ब

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

क्रमागत

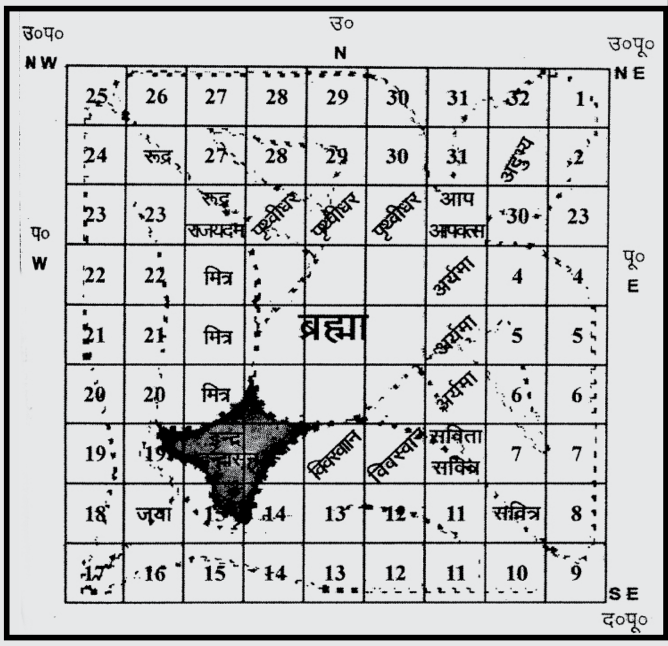

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

2. कूर्मपृष्ठा भूमि

मध्ये उच्चं भवेद्यत्र नीचं
चैव चतुर्दिशम।
कूर्मपृष्ठा च सा भूमिः
कथिता गजकोत्तभैः।।
वासश्च कूर्मपृष्ठायां
नित्यमुत्साहवर्धकः।
धन–धान्यादिकं तस्य
जायते च यशः सुखम।।

अर्थात् जो भूमि बीच (मध्य) में ऊंची और चारों ओर से अवनत (नीची) हो वह कूर्मपृष्ठाभूमि कहलाती है। ऐसी भूमि पर भवन निर्माण करने से उत्साह, धन–धान्य, यश और सुख की वृद्धि होती है।

3. दैत्यपृष्ठा भूमि

पूर्वाग्नि–शुम्भुकोणेषु
स्थलमुच्चं यदाभवेत्।
पश्चिमे यत्र नीचं सा
दैत्यपृष्ठाऽभिधीयते।।
वासस्तु दैत्यपृष्ठायां
सदा कलहकारक।
पशुपुत्र धनादीनां
हानिर्भवति गेहिनः।।

अर्थात् जो भूमि पूर्व, आग्नेय, ईशान दिशा में ऊंची हो और पश्चिम दिशा में नीची हो, वह दैत्य पृष्ठ भूमि कहलाती है। ऐसी भूमि पर गृह–निर्माण करके उसमें रहने वाला सदा कलह (अगड़ा) ग्रस्त रहता है तथा पशु–पुत्र और धन की हानि होती है।

4. नागपृष्ठाभूमि

पूर्वपश्चिमयो दीर्घा योच्चा
दक्षिण साभ्ययोः।
नागपृष्ठा च सा प्रोक्ता
निन्दिता पूर्वसूरिभि।।
तत्र वासो गृहेशस्य धन
धान्यादिहानिकृत।
रिपुभीतिकदश्चैव
तस्मात्तां परिवर्जयेत्।।

अर्थात् पूर्व–पश्चिम दिशा की ओर लम्बी दक्षियोत्तर में ऊंची भूमि नागपृष्ठा कहलाती है ऐसी भूमि पर भवन निर्माण करने से धन–धान्यादि की हानि, शत्रुभय रहता है। ऐसी भूमि पर गृह–निर्माण नहीं करना चाहिए।

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

यदि बारहवें भाव में राहु अशुभ हो तो बहुत परिश्रम करने के बाद जातक सदा त्रस्त रहता है और उसे जीवन में आराम नहीं मिलता। प्रायः रात के समय उसके विश्राम में बाधा डालने वाली स्थितियां पैदा होती रहती हैं। इसलिए कई बार इन परिस्थियों से घबरा कर वह आत्महत्या करने के बारे में भी सोचता है। यदि कुंडली में शनि अशुभ हो तो जातक बहुत ही फिजूल खर्च करता है। ऐसा जातक यदि दूसरों से ईर्ष्या करता है तो वह हमेशा दुःखी ही रहता है। ऐसे जातक की हथेली में चित्र में दर्शाये स्थान पर राहु का निशान रहता है।

यदि राहु बारहवें भाव में हो जातक ब्रह्मज्ञानी व मस्तमौला स्वभाव का होता है। उसकी ससुराल अमीर घर में होती है। वह अपना धन प्रायः नेक कामों में खर्च करता है। जातक को शनि के उच्च होने के कारण सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। वैसे जातक शेखचिल्ली की तरह स्वप्न देखने वाला होता है।

उपाय

1. हमेशा भोजनालय में बैठ कर खाना खायें, शयन कक्ष में नहीं।
2. नित्य प्रति जूट की थैली में सौंफ या चीनी डालकर उसे रात को सोते समय अपने सिरहाने रखें।
3. यदि अपनी आय का कुछ भाग अपनी बहन को देते रहें तो शुभ फल मिलेगा।
4. नियमित योगाभ्यास करें बहुत सारी बाधाएं दूर हो जायेंगी।

लाल किताब के अनुसार केतु बारह भावों में

नजर पांव तेरे जो उखड़े पड़ेंगे।
सभी जेर रहते ही सिर पर चढ़ेंगे॥

लाल किताब में केतु ग्रह विघ्नों का हरण करने वाले देवता गणेश का प्रतीक है। केतु का एक अर्थ झंडा भी होता है। लाल किताब में केतु मुख्य रूप में यात्रा का और कुत्ते का तथा बेटे का कारक है। यदि कुंडली में केतु अशुभ हो तो दूसरों के सम्मुख अपने दुःख का वर्णन करने से केतु और भी अशुभ फल देता है। ऐसी स्थिति होने पर बृहस्पति के अनुकूलन वाला उपाय करने से लाभ होता है।

केतु को अंग्रेजी भाषा में 'ड्रेगन टेल' कहते हैं। केतु का वार रविवार है तथा रंग काला-सफेद है। केतु भी एक नपुंसक ग्रह है और छठे भाव का कारक है। ग्रहों में शुक्र-राहु मित्र है और चन्द्रमा व सूर्य शत्रु व बुध, बृहस्पति व शनि सम हैं। केतु का वर्ष में भोग काल 43 दिन, जीवन में 42 वर्ष और इसकी महादशा 7 वर्ष की होती है।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

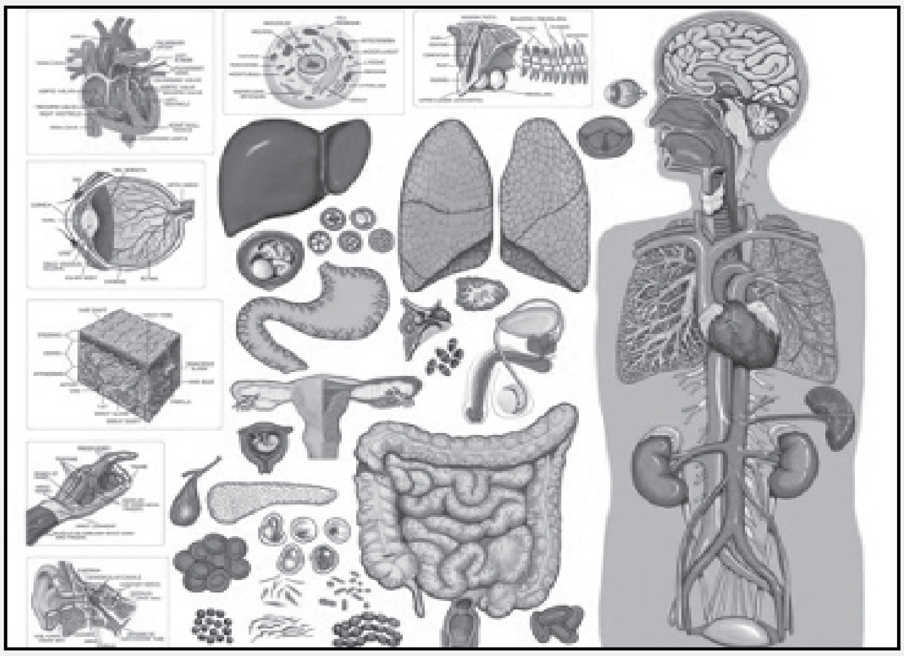

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

कब्ज के उपचार में उपयोगी प्राणायाम

आज के बदलते युग परिवेश में दिन-ब-दिन हमारी दिनचर्या में शारीरिक श्रम की कमी होती जा रही है। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि लोग नाना प्रकार के रोगों की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। श्रम न करने का सबसे पहला प्रभाव हमारे पाचन तंत्र पर पड़ता है। शारीरिक श्रम की कमी और कृत्रिम जीवन शैली के फलस्वरूप हमारा खाया हुआ भोजन सही तरीके से पच नहीं पाता, हमें अक्सर कब्ज आदि उदर रोगों का शिकार होना पड़ता है।

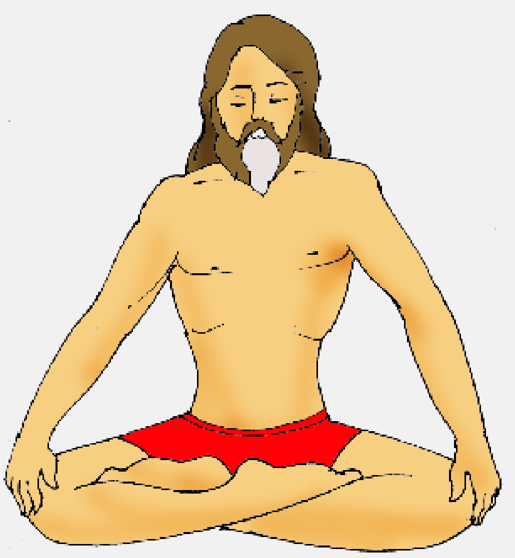

हमारे प्राचीन मनीषियों ने इस बात की स्पष्ट चर्चा की है कि कब्ज से छुटकारा पाने के लिए प्लावनी कुम्भक का प्रभाव श्रेष्ठ रहता है। पुराने से पुराने कब्ज में भी उससे आशातीत लाभ होते देखा गया है। विधि इस प्रकार है -

एक स्थिर आसन में बैठें। नाक के दोनों छिद्रों से समान रूप से धीरे-धीरे इतना श्वास भीतर खींचे कि पेट पूरी तरह फूलकर तन जाये। जब ऐसा महसूस होने लगे कि पेट वायु से पूरा भर गया है तो श्वास को यथाशक्ति रोके रहें। फिर नाक के दोनों छिद्रों से धीरे-धीरे श्वास को बाहर निकालें, यह प्राणायाम की एक प्रक्रिया हुई। सुविधा के अनुसार इसे जितनी बार किया जा सके, इसे करना चाहिए।

यदि नियमित रूप से दक्षिण रेचक प्राणायाम का अभ्यास किया जाये तो उससे भी कब्ज की शिकायत दूर होती है।

पेट के सभी रोगों के उपचार हेतु प्राणायाम

अनियमित खान-पान व बदलते युग परिवेश की भाग-दौड़ भरी जीवनशैली और पथ्य-परहेज पर विशेष ध्यान न देने की वजह से लोग तरह-तरह के शारीरिक व मानसिक रोगों के शिकार होते जा रहे हैं।

क्रमशः

साप्ताहिक राशिफल

22 सितंबर - 28 सितंबर तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

22 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। भाई-बन्धु का सहयोग होगा। 23, 24 को समय प्रतिकूल होगा। महत्वपूर्ण कार्य व वार्ता आदि को स्थगित रखें तो उचित होगा। 25, 26 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा। बाधा व परेशानी आदि से राहत महसूस करेंगे। 27, 28 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। रुके हुए धन प्राप्त होने के योग बनेंगे।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

22 को समय मध्यम होगा। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। कुटुम्ब परिवार में कोई शुभ व मांगलिक कार्य होना संभव होगा। 25, 26 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। झूठा आरोप व आघात लगना संभव होगा। माता के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी। 27, 28 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत महसूस करेंगे।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

22 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुनः अनुकूल होगी। 23, 24 को समय मध्यम होगा। कार्यभार से परेशान होंगे। भाग-दौड़ व परिश्रम लगा रहेगा।25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। साहस व पराक्रम तेज होगा। पास-पड़ोस से संबंध में सुधार होगा।27, 28 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। धन के अपव्यय पर नियंत्रण रखें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

22 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुनः अनुकूल व शुभ होगी। कार्य-व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा। 25, 26 को समय मध्यम होगा। खान-पान व फैशन आदि में रुचि बढ़ेगी। व्यय की अधिकता होगी। 27, 28 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। नौकरी आदि के क्षेत्र में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

22 को समय शुभ व अनुकूल होगा। 23, 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मित्रों के साथ समय व्यतीत करेंगे। 25, 26 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। स्वास्थ्य में सुधार महसूस करेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगा। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। 27, 28 को समय मध्यम होगा। कार्य-व्यवसाय संबंधी चिंता। भाग-दौड़ व परेशानी लगा रहेगा। मित्र आदि का सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

22 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। मानसिकता तनाव से राहत मिलेगी। 23, 24 को समय शुभ होगा। धन संचय के अवसर प्राप्त होंगे। 25, 26 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शारीरिक व मानसिक तनाव महसूस करेंगे। 27, 28 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

22 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। शुभ व लाभप्रद स्थिति होगी।23, 24 को समय शुभ है। शुभ फलों की प्राप्ति होती रहेगी। विशेष कार्य को करने का अवसर प्राप्त होगा।25, 26 को समय शुभ व लाभप्रद साबित होगा। दूरस्थ मित्रों से नये व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। 27, 28 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। चिकित्सा पर व्यय होगा।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

22 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। कानूनी उलझनें बढ़ेंगी। 23, 24 को समय मध्यम है। शुभ कार्यों की ओर मन प्रेरित होगा। 25, 26 को ग्रह-गोचर शुभता से भाग्योदय होगा। इच्छित कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। शुभ कार्यों की योजना व धन लाभ। 27, 28 को समय शुभ है। अपनों का सहयोग। मन में हर्ष व उल्लास महसूस करेंगे।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

22 को समय शुभ है। घर में हर्षोल्लास का वातावरण होगा। 23, 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। आपका स्वास्थ्य प्रभावित होगा। आपके अपने ही धोखा देंगे। 25, 26 को समय व परि. स्थिति में सुधार होगा। बिगड़े हुए कार्य सुधरने का अवसर प्राप्त होगा। 27, 28 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। व्यावसायिक स्थिति उत्तम होगी।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

22 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। मानूनी झमेले व मुकदमें आदि में विजयी होंगे। 23, 24 को समय शुभ होगा। शुभ कार्यों की योजना बनेगी। स्वजनों का सहयोग प्राप्त होगा।25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति अशुभ व प्रतिकूल होगी। अचानक कार्य में बाधा व हानि होना संभव होगा। 27, 28 को समय मध्यम होगा। परिस्थिति में सुधार होगा।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

22 को संतान संबंधी समस्या परेशान कर सकती है। चिकित्सा आदि पर व्यय होगा। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। साहस व पराक्रम बढ़ेगा। 25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। धन लाभ होगा। व्यावसायिक योजना सफल होगी। 27, 28 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। बनते हुए कार्य में रुकावट व बाधा उत्पन्न हो सकती है।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

22 को समय प्रतिकूल होगा। भाग्य साथ नहीं देगा। 23, 24 को संतान संबंधी परेशानी हो सकती है।। आय व व्यय समान होगा। 25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ हागी। भाग्य साथ देगा। कानूनी मुद्दों में बिजयी होंगे। 27, 28 को समय शुभ होगा। घर-परिवार में शुभ व मांगलिक कार्यों की योजना बनेगी।

प्राचीन मनीषियों ने नित्यप्रति देव पूजन के साथ ही पितृ तर्पण करना भी हर गृहस्थ के लिए आवश्यक बताया है। जो किसी कारण वश ऐसा नहीं कर पाते, उन्हें आश्विन मास के पितृ पक्ष में पितरों का श्राद्ध व तर्पण अवश्य करना चाहिये। इस वर्ष 12 सितंबर को भाद्रपद पूर्णिमा को किये जाने वाले प्रौष्ठपदी महालय श्राद्ध की तिथि के साथ ही पितृपक्ष प्रारम्भ हो रहा है जो 27 सितंबर तक चलेगा।

पार्वण आदि श्राद्धों के अधिकारी तथा श्राद्धों की कर्तव्यता

हमारे देश में मरणोपरांत किये जाने वाले श्राद्ध-तर्पणादि की कई विधियां सनातन काल से प्रचलित हैं। देश, काल, पात्र व परिस्थितियों के अनुसार सभी प्रकार के श्राद्ध-तर्पण महत्वपूर्ण हैं। हमारे प्राचीन मनीषियों ने नित्यप्रति देव पूजन के साथ ही पितृ तर्पण करना भी हर गृहस्थ के लिए आवश्यक बताया है। जो किसी कारण वश ऐसा नहीं कर पाते, उन्हें आश्विन मास के पितृ पक्ष में पितरों का श्राद्ध व तर्पण अवश्य करना चाहिये। इस वर्ष 12 सितंबर को भाद्रपद पूर्णिमा को किये जाने वाले मातामह श्राद्ध की तिथि के साथ ही पितृपक्ष प्रारम्भ हो रहा है जो 27 सितंबर तक चलेगा। इस अवसर पर प्रस्तुत है गरुड पुराण से उद्धृत एक महत्वपूर्ण प्रसंग जिसे स्वयं भगवान विष्णु ने सुनाया है।

पक्षीराज गरुड से श्री विष्णु ने कहा - हे खगेश्वर! अब मैं प्रति वर्ष होने वाले पार्वण श्राद्ध का वर्णन तुमसे कर रहा हूँ। मृत व्यक्ति के औरस और क्षेत्रज पुत्र को प्रतिवर्ष पार्वण श्राद्ध करना चाहिये। औरस एवं क्षेत्रज पुत्रों के अतिरिक्त अन्य को एकोद्दिष्ट विधि से श्राद्ध करना चाहिये, पार्वण श्राद्ध नहीं।

अग्निहोत्र न करने वाले मृत ब्राह्मण के क्षेत्रज तथा औरस दोनों पुत्र यदि अग्निहोत्र नहीं हैं तो उन्हें एकोद्दिष्ट श्राद्ध नहीं करना चाहिये। प्रतिवर्ष पार्वण श्राद्ध करना चाहिये। यदि पुत्र अथवा पिता में से कोई एक साग्निक हो तो प्रतिवर्ष क्षेत्रज और औरस पुत्र को पार्वण श्राद्ध करना चाहिये। किंतु कुछ लोगों का कहना है कि पुत्र अग्निहोत्र हों या न हों, पितृगण भी अग्निहोत्र रहे हों या न रहे हों, फिर भी एकोद्दिष्ट श्राद्ध पुत्रों को अपने पिता की मृत्यु तिथि पर करना चाहिये। जिसकी मृत्यु दर्शकाल अथवा प्रेत पक्ष में होती है, उसके सभी पुत्र पार्वण श्राद्ध करें।

एकोद्दिष्ट शेष पेज 14 पर

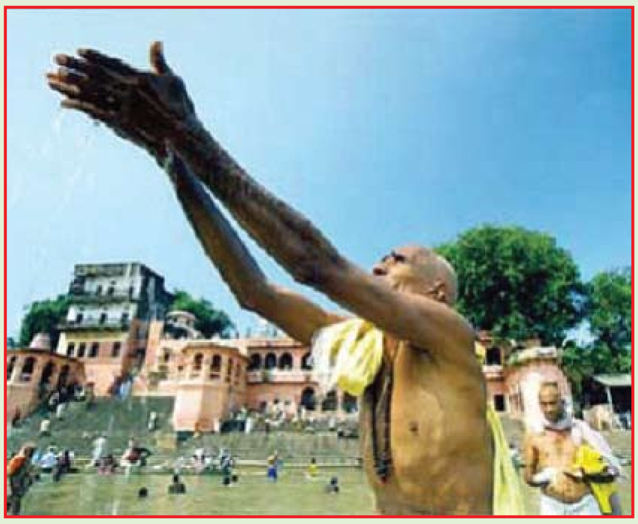

पितरों की अनुकंपा पाने के लिए आवश्यक है वार्षिक श्राद्ध व तर्पण

क्रमागत

अपात्रक श्राद्ध में साक्षात ब्राह्मण आसन पर नहीं बिठाये जाते हैं। विश्वेदेवों एवं पितरों के आसनों पर इनके प्रतिनिधि के रूप में कुश (दंड-विधान त्रिकुश, पटवेल एवं मोटक) ही रखा जाता है।

श्री ब्रह्माजी ने कहा - हे व्यास, अब मैं श्राद्ध विधि का वर्णन करता हूँ। इस विधि के अनुसार पितरों को श्राद्ध करने से भोग एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्राद्धकर्ता श्राद्ध के एक दिन पहले ब्राह्मणों को निमंत्रित करे। ब्रह्मचारी को निमंत्रित करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

सव्य होकर देवताओं को एवं अपसव्य होकर पितरों को निमंत्रित करें। श्राद्धकर्ता 'ॐ स्वागतं भवद्भिः' आप लोग मेरा स्वागत स्वीकार करें - यह निवेदन विश्वेदेवों एवं पितरों से करें। तदनन्तर 'ॐ सुस्वागतम्' इस प्रकार विश्वेदेवों एवं पितरों के प्रतिनिधि ब्राह्मण बोलें। श्राद्धकर्ता 'ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य एतत्पादोदकमर्घ्यं स्वाहा' कहकर देव-ब्राह्मणों के चरणों पर देवतीर्थ से समूल कुशों के सहित जल प्रदान करे। यह कुश द्विगुणभुग्न में नहीं होना चाहिए।

इसके बाद दक्षिणाभिमुख होकर दाहिने कंधे पर यज्ञोपवीत रखकर पिता, पितामह के नाम, गोत्र का उल्लेख करते हुए 'ॐ एतत्पादोदकमर्घ्यं स्वधा' इस मंत्र से पितरों के प्रतिनिधि ब्राह्मणों के चरणों में पितृतीर्थ से द्विगुण-भुग्न कुश एवं पुष्पसहित जल प्रदान करें।

इसी प्रकार मातामह आदि के लिये उद्दिष्ट ब्राह्मणोंके चरणों में पादोदक और अर्घ्य समर्पित करें। इसके बाद 'ॐ एतदाचमनीयं स्वाहा' कहकर ब्राह्मणों के चरणों में पादोदक और अर्घ्य समर्पित करे। इसके बाद 'ॐ एतदाचमनीयं स्वाहा' कहकर ब्राह्मण के हाथ में जल एवं 'ॐ एष वोऽर्घ्यं' मंत्र से अर्घ्य तथा पुष्प दे। तत्पश्चात 'ॐ सिद्धमिदमासनम्' से आसन सम्पन्न है, कृपया ग्रहण करें, ऐसा निवेदन करें। 'इह सिद्धमिदमासनम्' ऐसा कहकर प्रतिनिधि ब्राह्मण प्रतिवचन दें।

इसके बाद 'ॐ भूः', 'ॐ भूवः', इत्यादि सप्तव्याहृतियों का पाठकर देव-ब्राह्मण को पूर्वमुख और पितृ ब्राह्मणों को उत्तर मुख बैठकर निम्नलिखित मंत्र का तीन बार जप करें-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च
महायोगिभ्य एवं च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव भवन्तु ते॥

तदनन्तर मास, पक्ष, तिथि, देश तथा पिता, पितामह का नाम एवं गोत्र का उच्चारण कर 'विश्वदेवपूर्वकं श्राद्धं करिष्ये' यह संकल्प करे तथा 'ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा' का उच्चारण करे। इसके बाद 'ॐ विश्वेदेवानावाहयिष्ये से प्रार्थना करके 'ॐ आवाहय' के द्वारा ब्राह्मण की आज्ञा प्राप्त होने पर 'ॐ विश्वेदेवा', 'ॐ ओषधयः' एवं आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये अत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

इत्यादि मंत्रों से श्राद्धकर्ता विश्वेदेवा का आवाहन करे तथा 'ॐ अपहतासुरा रक्षसि वेदिषदः' मंत्र का तीन बार उच्चारण कर यव बिखेरे। श्राद्धकर्ता 'ॐ पात्रमहं करिष्ये' इस वाक्य से अनुज्ञा प्राप्त करे तथा 'ॐ कुरुष्व' इससे ब्राह्मणों के द्वारा अनुज्ञात होकर अग्रभाग से युक्त दो कुश ग्रहण करे। एक प्रादेश कुश के दो पत्रों को लेकर 'ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो.' आदि मंत्रों से दूसरे कुशपत्र के द्वारा उसका छेदन करे। इसके बाद 'ॐ विष्णुर्मनसा पूतेस्थ' से उन दो कुशपत्रों का अभ्युक्षण कर दूसरे कुशपत्र के द्वारा त्रिवेष्टनपूर्वक उसे अर्घ्यपात्र में स्थापित करे। तत्पश्चात 'ॐ शं नो देवीरभिष्ट्य.' से उस पात्र में जल तथा 'ॐ यवोसि.' इत्यादि मंत्र से जौ एवं 'ॐ या दिव्या आपः पयसा.' इस मत्र के पाठ के साथ 'ॐ एषोर्वे नमः' से ब्राह्मणों के हाथ में अर्घ्यपात्र से जल दे।

तदनन्तर श्राद्धकर्ता अर्घ्यपात्रस्थ अवशिष्ट संस्रवजल और पवित्रक को ग्रहण कर ब्राह्मण के दक्षिण पार्श्व में रखें और अर्घ्य पात्र को ऊर्ध्वमुख कुश के ऊपर स्थापित करके उसमें जल तथा पवित्रक भी रख दें।

तत्पश्चात 'ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य एतानि गन्धपुष्पधूपदीपवासोयुग्मयज्ञोपवीतानि नमः' से विश्वेदेवों को गंधादि प्रदान कर समर्पित गन्ध आदि की पूर्णता की कामना गन्धादि दानमच्छिद्रमस्तु कहकर करे। विश्वेदेवों के प्रतिनिधि ब्राह्मण 'ॐ अस्तु' से समर्पित चन्दनादि की परिपूर्णता स्वीकर करे। ऋत्विक् ब्राह्मण 'ॐ अस्तु' से प्रत्युत्तर दे। श्राद्धकर्ता पितृपितामहप्रपितामहानां मातापहप्रमातामहवृद्ध प्रमातापहानां सपत्नीकानां श्राद्धमहं करिष्ये ऐसा कहकर पितरों के श्राद्ध की अनुज्ञा माँगे। ब्राह्मणों के द्वारा कुरुष्व इस वाक्य से अनुज्ञात होने पर 'ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च.' मत्र का तीन बार जप करे।

तदनन्तर पित्रादि एवं मातामहादि का नाम, गोत्र का उल्लेख करते हुए 'इदमासनं स्वधा' पद से ब्राह्मणों के वामपार्श्व में आसन दानकर 'ॐ पितृन् आवाहयिष्ये' से ब्राह्मणों से अनुज्ञा की प्रार्थना करे और 'ॐ आवाहय' इस वाक्य से ब्राह्मणों के द्वारा अनुज्ञात होकर 'ॐ उशन्तस्त्वा.' एवं 'ॐ आयान्तु नः पितरः .' इत्यादि मंत्रों से पितरों का आवाहन करे। 'ॐ अपहतासुरा रक्षांसि वेदिषदः' मंत्र से तिल का विकरण करे। पूर्व की भाँति क्रम से स्थापित अर्घ्यपात्र में उदक दे तथा 'ॐ तिलोसि सोमदेवत्यो.' आदि मंत्रों से तिल दान करे।

इसके बाद दोनों हाथ से गन्ध, पुष्प प्रदान कर पितृपात्र को उठाकर 'ॐ या दिव्या.' इत्यादि मंत्र का पाठ करके अंत में पित्रादि का गोत्र, नाम का उल्लेख कर 'एष तेर्घ्यः स्वधा' से पावित्री के साथ अर्घ्यपात्र को ग्रहण करने के बाद वापार्श्व में कुशा के ऊपर 'ॐ पितृभ्यः स्थानामसि' मंत्र से अधोमुख अर्घ्यपात्र शेष पेज 15 पर

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

जिसके पुण्य से निजकृत पापों के फलस्वरूप मिलने वाली प्रतिकूलता का शमन होता है और मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है।

विघ्न विनाशक गणेश को चतुर्थी तिथि विशेष प्रिय है। धर्म ग्रंथों में कुछ चतुर्थी तिथियों को विशेष दर्जा देते हएु उन्हें शिवा, शांता तथा सुखा नाम दिया गया है। इस बार आश्विन कृष्ण पक्ष का चतुर्थी व्रत 16 सितंबर को मनाया जा रहा है। यहां स्कंद पुराण से उस प्रसंग को विशेष रूप से उद्धत करते हुए स्पष्ट किया गया है कि मंगलवार की चतुर्थी तिथि सुखा चतुर्थी कही जाती है उसे अंगारकी चतुर्थी भी कहा जाता है।

एक बार राजा शतानीक द्वारा गणेश जी की विशेष अनुकंपा के लिए किये जाने वाले व्रत के संबंध में पूछने पर सुमन्तु मुनि ने कहा - राजन्, चतुर्थी तिथि तीन प्रकार की होती है - शिवा, शान्ता और सुखा। अब मैं इनका लक्षण कहता हूँ, उसे सुनें -

भाद्रपद मास की शुक्ला चतुर्थी का नाम शिवा है। इस दिन जो स्नान, दान, उपवास, जप आदि सत्कर्म किया जाता है, वह गणपति के प्रसाद से सौ गुना हो जाता है। इस चतुर्थी को गुड़, लवण और घृत का दान करना चाहिये, यह शुभकर माना गया है और गुड़ के अपूपों से ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये तथा उनकी पूजा करनी चाहिये। इस दिन जो स्त्री अपने सास और ससुर को गुड़ के पूए तथा नमकीन पूए खिलाती है, वह गणपति के अनुग्रह से सौभाग्यवती होती है। पति की कामना करने वाली कन्या विशेष रूप से इस चतुर्थी का व्रत करे और गणेश जी की पूजा करे। राजन्, यह शिव चतुर्थी का विधान है।

माघ मास की शुक्ला चतुर्थी को शान्ता कहते हैं। यह शान्ता तिथि नित्य शान्ति प्रदान करने के कारण शान्ता कही गयी है। इस दिन किये हुए स्नान-दानादि सत्कर्म गणेश जी की कृपा से हजार गुना फलदायक हो जाते हैं। इस शान्ता नामक चतुर्थी तिथि को उपवास कर गणेश जी का पूजन तथा हवन करे और लवण, गुड़, शाक तथा गुड़ के पूए ब्राह्मणों को दान में दे। विशेष रूप से स्त्रियां अपने ससुर आदि पूज्य जनों का पूजन करें एवं उन्हें भोजन करायें। इस व्रत के करने से अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है, समस्त विघ्न दूर होते हैं और गणेश जी की कृपा प्राप्त होती है।

किसी भी महीने के मंगलवार युक्त शुक्ला चतुर्थी को सुखा कहते हैं। यह व्रत स्त्रियों को सौभाग्य, उत्तम रूप और सुख देने वाला है। भगवान शंकर एवं माता पार्वती के संयुक्त तेज से भूमि द्वारा रक्तवर्ण के मंगल की उत्पत्ति हुई। भूमि का पुत्र होने से वह भौम कहलाया और कुंज, रक्त, वीर, अंगारक आदि नामों से प्रसिद्ध हुआ। वह शरीर के अंगों की रक्षा करने वाला तथा सौभाग्य आदि देने वाला है, इसीलिये अंगारक कहलाया। जो पुरुष अथवा स्त्री भौमवार युक्त शुक्ला चतुर्थी को उपवास करके भक्तिपूर्वक प्रथम गणेश जी का, तदनन्तर रक्त चन्दन, रक्त पुष्प आद से भौम का पूजन करते हैं, उन्हें सौभाग्य आदि उत्तम रूप-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

प्रथम संकल्पकर स्नान करे, अनन्तर गणेश-स्मरणपूर्वक हाथ में शुद्ध मिट्टी लेकर इस मंत्र को पढ़े -

इह त्वं वन्दिता पूर्वं
कृष्णेनोद्धरता किल।
तस्मान्मे दह पाप्मानं
यन्मया पूर्वसंचितम्॥

इसके बाद

शेष पेज 14 पर

इंदिरा एकादशी

जिसके पुण्य से निजकृत पापों के फलस्वरूप मिलने वाली प्रतिकूलता व दरिद्रता का शमन होता है और मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है।

वर्ष के बारह महीनों में आश्विन का महीना अति विशिष्ट है। इसका कृष्ण पक्ष पितरों को तृप्ति प्रदान करने वाला है और पितृ पक्ष के नाम से संबोधित किया जाता है। उसके शुक्ल पक्ष में शारदीय नवरात्र होता है जिसकी समाप्ति के बाद विजय दशमी का प्रसिद्ध त्यौहार आता है। संभवतः इसी वजह से इसके शुक्ल पक्ष को देव पक्ष कह कर भी पुकारते हैं। स्पष्ट है इस महीने के दोनों पक्ष विशेष फल प्रदान करते हैं। हमारे प्राचीन मनीषियों ने आश्विन मास के दोनों पक्षों की एकादशी को मनुष्य के हर प्रकार के मनोरथ सिद्ध करने वालापाप नाशक व्रत बताया है। पद्म पुराण में उन्हें इन्दिरा व पापाङ्कुशा नाम देते हुए जो प्रसंग आया है उसे यहाँ उद्धत किया जा रहा है।

एक बार भगवान श्री कृष्ण से युधिष्ठिर ने पूछा- मधुसूदन! कृपा करके मुझे यह बताइये कि आश्विन के कृष्ण पक्ष में कौन सी एकादशी होती है?

भगवान श्री कृष्ण बोले- राजन! आश्विन कृष्ण पक्ष में इन्दिरा नाम की एकादशी होती है, उसके व्रत के प्रभाव से बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। नीच योनि में पड़े हुए पितरों को भी यह एकादशी सद्गति देने वाली है।

राजन! पूर्वकाल की बात है, सत्य युग में इन्द्रसेन नाम से विख्यात राजकुमार थे, जो अब माहिष्मतीपुरी के राजा होकर धर्म पूर्वक प्रजा का पालन करते थे। उनका यश सब ओर फैल चुका था। राजा इन्द्रसेन भगवान विष्णु की भक्ति में तत्पर हो गोविन्द के मोक्षदायक नामों का जप करते हुए समय व्यतीत करते थे और विधिपूर्वक अध्यात्म तत्त्व के चिन्तन में संलग्न रहते थे। एक दिन राजा राज सभा में सुख पूर्वक बैठे हुए थे, इतने ही में देवर्षि नारद आकाश से उतर कर वहाँ आ पहुँचे। उन्हें आया देख राजा हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और विधिपूर्वक पूजन करके उन्हें आसन पर बिठाया, इसके बाद वे इस प्रकार बोले - मुनिश्रेष्ठ! आपकी कृपा से मेरी सर्वथा कुशल है। आज आपके दर्शन से मेरी सम्पूर्ण यज्ञ क्रियाएँ सफल हो गयीं। देवर्षे! अपने आगमन का कारण बता कर मुझ पर कृपा करें।

शेष पेज 14 पर

पेज 9 का शेष

जब प्रभु की कृपा ...

प्रभु की सेवा करते रहने का भाव हमेशा मन में रखना आध्यात्मिक दृष्टि से श्रेष्ठ है। उस सामर्थ्यवान ईश्वर के हाथ में सभी कुछ है। जो इस सत्य को न समझने की भूल करते हैं, स्वयं को सर्वशक्तिमान मानने लगते हैं, वे मनुष्य दण्ड के पात्र बनते हैं। उनकी समझ के अनुसार यह संसार उनकी जागीर है जबकि तथ्य यह है कि परमात्मा ही सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्यवान है। सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्यवान होते हुए भी वह सभी पर दया करता है। वह दया का सागर है, प्रेम का भण्डार है। उससे कोई प्रीति करे न करे, वह सबसे प्रीति करता है, ऐसे प्रभु को सब कुछ सौंपकर मात्र उनका सेवक बन जाना ही श्रेष्ठ है।

भगवान के चरणों में मन लगाकर उनकी सेवा में तत्पर रहने का भाव अति उत्तम है। सारे संसार का सुख मिल जाये। यहां तक कि यदि तीनों लोकों का राज्य भी मिल जाए तो भी भगवान का सेवक बनना उचित होगा। लक्ष्मण जी ने भी भगवान की सेवा का व्रत लिया। हनुमान जी भी भगवान के नित्य सेवक बन गये। उन्होंने भगवान को मालिक व स्वयं को उनका सेवक हो जाने का व्रत ले लिया। निष्कपट भाव से बिना किसी स्वार्थ के ईश्वर के प्रति समर्पित और प्रभु की सेवा में तल्लीन रहकर जीवन यापन करना जीव की उत्तम अवस्था में ले जाता है। क्योंकि भगवान तो स्वयं अपने सेवक पर प्रेम और दया भाव रखते हैं।

इस संसार में बिना किसी स्वार्थ व दिखावे के सभी में ईश्वर का दर्शन करता हुआ भक्त परमात्मा की सेवा करने का भाव दिल से रखकर समाज के असहाय, निर्धन तथा रोगी आदि की सहायता करते रहना शुभकर्म संपादित करते रहने की प्रक्रिया है। यही उस परमात्मा की सच्ची सेवा कही जाती है। सच कहिए तो एक मात्र ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है और वही सर्व सहायक भी है। हमारे अंदर जो भी शक्तियां हैं, ये सब ईश्वरीय कृपा से ही उपलब्ध हुई हैं। इसलिए मनुष्य को कभी सेवा करने का अभिमान नहीं करना चाहिए। इस संसार में हम जो भी सेवा-भक्ति कर रहे हैं उसकी शक्ति हमें परमात्मा से ही प्राप्त होती है। जो भक्त तहेदिल से इस बात को स्वीकार कर लेता है वह तुरंत त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है। लेकिन भक्ति की युक्ति शास्त्र ज्ञान से नहीं सद्गुरु से प्राप्त होती है और प्रभु की कृपा से ही सद्गुरु प्राप्त होते हैं।

पेज 12 का शेष

पार्वण आदि ...

श्राद्ध पुत्रहीन पुरुष और स्त्री का भी हो सकता है। एकोद्दिष्ट यज्ञ में समूल कुश का प्रयोग करना चाहिये। बाहर से कटे हुए अथवा एक बार काटे गये कुश ही श्राद्ध में वृद्धिदायक होते हैं। यदि किये जाने वाले पार्वण श्राद्ध के बीच अशौच हो जाता है तो यजमान उस अशौच के समाप्त होने के बाद श्राद्ध करे। एकोद्दिष्ट श्राद्ध का काल आ जाने पर यदि किसी प्रकार का विघ्न आ जाता है तो दूसरे मास उसी तिथि पर वही एकोद्दिष्ट श्राद्ध किया जा सकता है। शूद्र तथा उसकी पत्नी और उसके पुत्र का श्राद्ध मौन अर्थात मन्त्रोच्चार रहित होना चाहिये। इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य- इन तीनों द्विजातियों की कन्या और यज्ञोपवीत संस्कार से हीन ब्राह्मण का भी श्राद्ध मौन होकर ही करना धर्म विहित है। एक ही समय में एक ही घर के बहुत से लोगों की अथवा दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी हो तो उनके श्राद्ध का पाक एक साथ और श्राद्ध पृथक-पृथक करना चाहिये। साथ में मरने पर विधि इस प्रकार है- पहले पूर्वमृत को, तदनन्तर द्वितीय और तृतीय को क्रमशः पिण्डदान करना चाहिये।

जो आलस्य रहित होकर इस विधान के अनुसार अपने माता-पिता का प्रत्येक वर्ष श्राद्ध करता है, वह उनका उद्धार करके स्वयं भी परम गति को प्राप्त करता है। यदि किसी प्राणी की मृत्यु और प्रस्थान काल का दिन स्मरण नहीं है, किंतु वह मास ज्ञात है तो उसी मास की अमावस्या तिथि में उस मृतक की मृत्यु तिथि माननी चाहिये। यदि किसी की मृत्यु का मास ज्ञात नहीं है, किंतु दिन की जानकारी है तो मार्गशीर्ष (अगहन) अथवा माघ मास में उसी दिन उसका श्राद्ध किया जा सकता है। जब अपने सम्बंधी की मृत्यु का दिन एवं मास दोनों अज्ञात हों तो श्राद्ध कर्म के लिये यात्रा के दिन और मास ग्रहण करने चाहिये। जब मृतक के प्रस्थान का भी दिन और मास न ज्ञात हो तो जिस दिन एवं मास में मृत्यु की बात सुनी गयी हो, उसे ही श्राद्ध के लिये उपयुक्त मान ले। बिना प्रवास के भी मृत्यु होने पर दिन तथा मास दोनों विस्मृत हो गया हो तो पूर्ववत मृत तिथि का निर्णय करना चाहिये।

यदि कोई गृहस्थ प्रवास में है और उसके प्रवास के ही दिनों में उसके घर में किसी की मृत्यु हुई हो तथा मृत्यु के बाद अशौच के दिन बीत चुके हों और अशौच के अनन्तर जो एकादशाह-द्वादशाह आदि श्राद्ध विहित हैं, वे चल रहे हों, इसी बीच प्रवास में रहने वाला वह गृहस्थ घर आ जाता हो और आने के बाद ही मृत्यु की जानकारी उसे मिलती हो तो केवल वह गृहस्थ ही अशौच से ग्रस्त होगा और तत्काल यथा शास्त्र अपनी अशौच की निवृत्ति के लिये अपेक्षित विधि अपनायेगा। उसके द्रव्यादि पर अशौच नहीं होगा। उसके घर आने मात्र से उसकी अशुचिता का प्रभाव श्राद्ध के उपयोग में आने वाली वस्तुओं पर नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञातव्य है कि यदि श्राद्ध का मुख्य अधिकारी सुदूर देश में है और उसके घर आकर यथाधिकार श्राद्ध करने की सम्भावना नहीं बनती है, ऐसी स्थिति में अन्य अधिकारी पुत्रादि द्वारा यदि श्राद्ध कर्म प्रारम्भ कर दिया गया है तो उसे भी श्राद्ध प्रक्रिया पूर्ण करनी चाहिये। दाता और भोक्ता दोनों को जननाशौच अथवा मरणाशौच ज्ञात न हो तो उन दोनों में किसी को भी दोष नहीं लगता। जननाशौच और मरणाशौच का ज्ञान भोक्ता को हो जाय और दाता को न हो तो उस समय भोक्ता को ही पाप लगता है, उसमें वह दाता दोषी नहीं होगा।

जिस मृत व्यक्ति की तिथि ज्ञात नहीं है, उसकी मृत तिथि का निर्धारण पूर्वोक्त प्रकार से करके जो श्राद्धादि करता है, वह मृत व्यक्ति को तार देता है। नित्य श्राद्ध में निमन्त्रित ब्राह्मणों की सभी पितरों के साथ भक्तिपूर्वक अर्घ्य, पाद्य तथा गन्धादि के द्वारा पूजा करके पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को यथाविधि भोजन कराना चाहिये। आवाहनख स्वधाकार, पिण्डदान, अग्नौकरण, ब्रह्मचर्यादि नियम और विश्वेदेवकृत्य- ये कर्म नित्य श्राद्ध में त्याज्य हैं। इस श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा देकर प्रणाम निवेदन करते हुए बिदा करे।

विश्वेदेव आदि के उद्देश्य से ब्राह्मणों को नित्य श्राद्ध की भाँति जो भोजन कराया जाता है, वह देवश्राद्ध कहा जाता है। यदि अग्रिम दिन कोई शुभ कार्य- विवाह अथवा यज्ञोपवीत आदि करने हैं तो उसके पूर्व दिन मातृ श्राद्ध और पितृ श्राद्ध एवं मातामह श्राद्ध करने चाहिये। इन तीनों श्राद्धों के लिये अपेक्षित विश्वेदेव कार्य एक ही बार करना चाहिये। अर्थात तीनों श्राद्धों के लिये तीन बार विश्वेदेव कार्य नहीं करने चाहिये। पहले मातृपितामही तथा प्रपितामही के लिये, तदनन्तर पितृपितामह और प्रपितामह के लिये, तत्पश्चात मातामहादि के लिये क्रमशः आसनादि के दान की क्रिया सम्पन्न करनी चाहिये। यदि मातृ श्राद्ध में ब्राह्मणों का अभाव हो तो श्रेष्ठ परिवार में उत्पन्न हुई पति-पुत्र से सम्पन्न सौभाग्यवती आठ साध्वी स्त्रियों को ही निमन्त्रित किया जा सकता है।

इष्ट और आपूर्त-कृत्यों में आभ्युदयिक श्राद्ध करना चाहिये। उत्पात आदि की शान्ति के लिये नित्य-श्राद्ध के समान नैमित्तिक श्राद्ध करने का विधान है। हे तार्क्ष्य! जैसा मैंने कहा है, उसी प्रकार से नित्य श्राद्ध, देव श्राद्ध, वृद्धि श्राद्ध, काम्य श्राद्ध तथा नैमित्तिक श्राद्ध- इन पाँचों श्राद्धों को करता हुआ मनुष्य अपने समस्त अभीष्टों को प्राप्त करता है। इस तरह मैंने सब बता दिया।

पेज 13 का शेष

श्री गणेश चतुर्थी...

मिट्टी को गंगाजल से मिश्रित कर सूर्य के सामने करे, तदनन्तर अपने सिर आदि अंगों में लगाये और फिर जल के मध्य खड़ा होकर इस मंत्र को पढ़कर नमस्कार करे -

त्वमापो योनिः सर्वेषां
दैत्यदानवद्यौकसाम्।
स्वेदाण्डजोद्भिदां चेव रसानां पतये नमः॥

अनन्तर सभी तीर्थों, नदियों, सरोवरों, झरनों और तालाबों में मैंने स्नान किया - इस प्रकार भावना करता हुआ गोते लगाकर स्नान करे, फिर पवित्र होकर घर में आकर दूर्वा, पीपल, शमी तथा गौ का स्पर्श करे। इनके स्पर्श करने के मंत्र इस प्रकार हैं -

दूर्वा स्पर्श करने का मंत्र

नेत्रस्पन्दादिजं दुःखं दुःस्वप्नं
दुर्विचिन्तम्।
शक्तांनां च समुद्योगमश्वत्थ त्वं क्षमस्व
मे॥

गौ को स्पर्श करने का मंत्र

सर्वदेवमयी देवि मुनिभिस्तु सुपूजिता।
तस्मात् स्पृशामि वन्दे त्वां वन्दिता पापहा
भव॥

श्रद्धापूर्वक पहले गौ की प्रदक्षिणा कर उपर्युक्त मंत्र को पढ़े और गौ का स्पर्श करे। जो गौ की प्रदक्षिणा करता है, उसे सम्पूर्ण पृथ्वी की प्रदक्षिणा का फल प्राप्त होता है।

इस प्रकार इनको स्पर्श कर, हाथ-पैर धोकर, आसन पर बैठकर आचमन करे। अनन्तर खदिर की समिधाओं से अग्नि प्रज्वलित कर, घृत, दुग्ध, यव, तिल तथा विविध भक्ष्य पदार्थों से मंत्र पढ़ते हुए हवन करे। आहुति इन मंत्रों से दे - ॐ शर्वाय स्वाहा, ॐ शर्वपुत्राय स्वाहा, ॐ क्षोण्युत्संगभवायं स्वाहा, ॐ कुजाय स्वाहा, ॐ ललिताङ्गाय स्वाहा तथा ॐ लोहिताङ्गाय स्वाहा। इन प्रत्येक मंत्रों से 108 या अपनी शक्ति के अनुसार आहुति दे। अनन्तर सुवर्ण, चाँदी, चन्दन या देवदारु के काष्ठ की मंगल की मूर्ति बनाकर ताँबे अथवा चाँदी के पात्र में उसे स्थापित करे। घी, कुंकुम, रक्तचन्दन, रक्त पुष्प, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा करे अथवा अपनी शक्ति के अनुसार पूजा करे। अथव ताम्र, मृत्तिका या बाँस से बने पात्र में कुंकुम, केसर आदि से मूर्ति अंकित कर पूजा करे। अग्निर्मूर्धा इत्यादि वैदिक मंत्रों से सभी उपचारों को समर्पित कर वह मूर्ति ब्राह्मण को दे दे और यथा शक्ति घी, दूध, चावल, गेहूँ, गुड़ आदि वस्तु भी ब्राह्मण को दे। धन रहने पर कृपणता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कंजूसी करने से फल नहीं प्राप्त होता।

इस प्रकार चार बार भौमयुक्त चतुर्थी का व्रत कर श्रद्धापूर्वक दस अथवा पाँच तोले सोने की मंगल और गणपति की मूर्ति बनवाये। उसे बीस पल या दस पल के सोने, चाँदी अथव ताम्र आदि के पात्र में भक्तिपूर्वक स्थापित करे। सभी उपचारों से पूजा करने के बाद दक्षिणा के साथ सत्पात्र ब्राह्मण को उसे दे, इससे इस व्रत का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है। राजन्, इस प्रकार इस उत्तम तिथि को मैंने कहा। इस दिन जो व्रत करता है, वह चन्द्रमा के समान कान्तिमान्, सूर्य के समान तेजस्वी एवं प्रभावान् तथा वायु के समान बलवान होता है और अंत में महागणपति के अनुग्रह से भौमलोक में निवास करता है। इस तिथि के माहात्म्य को जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक पढ़ता-सुनता है, वह महापातकादि से मुक्त होकर श्रेष्ठ सम्पत्तियों को प्राप्त करता है।

इंदिरा एकादशी...

नारद जी ने कहा- नृपश्रेष्ठ! सुनो, मेरी बात तुम्हें आश्चर्य में डालने वाली हैं, मैं ब्रह्म लोक से यम लोक में आया था, वहाँ एक श्रेष्ठ आसन पर बैठा और यमराज ने मेरी भक्तिपूर्वक पूजा की। उस समय यमराज की सभा में मैंने तुम्हारे पिता को भी देखा था। व्रत भंग के दोष से वहाँ आये थे। राजन! उन्होंने तुमसे कहने के लिये एक सन्देश दिया है, उसे सुनो। उन्होंने कहा है, बेटा! मुझे इन्दिरा के व्रत का पुण्य देकर स्वर्ग में भेजो। उनका यह सन्देश लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूँ। राजन! अपने पिता को स्वर्ग लोक की प्राप्ति कराने के लिये इन्दिरा का व्रत करो।

राजा ने पूछा- भगवन! कृपा करके इन्दिरा का व्रत बताइये। किस पक्ष में, किस तिथि को और किस विधि से उसका व्रत करना चाहिये।

नारद जी ने कहा- राजेन्द्र! सुनो, मैं तुम्हें इस व्रत की शुभ कारक विधि बतलाता हूँ। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में दशमी के उत्तम दिन को श्रद्धायुक्त चित्त से प्रातःकाल स्नान करे। फिर मध्याह्न काल में स्नान करके एकाग्रचित हो एक समय भोजन करे तथा रात्रि में भूमि पर सोये। रात्रि के अन्त में निर्मल प्रभात होने पर एकादशी के दिन दातुन करके मुँह धोये, इसके बाद भक्ति भाव से निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए उपवास के नियम ग्रहण करें-

अद्य स्थित्वा निराहारः
सर्वभोगविवर्जितः।
श्वो भोक्ष्ये पुण्डरीकाक्ष शरणं मे
भवाच्युत॥

कमलनयन भगवान नारायण! आज मैं सब भोगों से अलग हो निराहार रह कर कल भोजन करूँगा। अच्युत! आप मुझे शरण दें।

इस प्रकार नियम करके मध्याह्न काल में पितरों की प्रसन्नता के लिये शालग्राम शिला के सम्मुख

विधिपूर्वक श्राद्ध करे तथा दक्षिणा से ब्राह्मणों का सत्कार करके उन्हें भोजन करावे। पितरों को दिये हुए अन्नमय पिण्ड को सूँघ कर विद्वान पुरुष गाय को खिला दे। फिर धूप और गन्ध आदि से भगवान हृषीकेश का पूजन करके रात्रि में उनके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर भाई-बन्धु, नाती और पुत्र आदि के साथ स्वयं मौन होकर भोजन करे। राजन! इस विधि से आलस्य रहित होकर तुम इन्दिरा का व्रत करो। इससे तुम्हारे पितर भगवान विष्णु के वैकुण्ठधाम में चले जायँगे।

भगवान श्री कृष्ण कहते है- राजन! राजा इन्द्रसेन से ऐसा कहकर देवर्षि नारद अन्तर्धान हो गये। राजा ने उनकी बतायी हुई विधि से अन्तःपुर की रानियों, पुत्रों और भृत्योंसहित उस उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया। कुन्तीनन्दन! व्रत पूर्ण होने पर आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। इन्द्रसेन के पिता गरुड़ पर आरूढ़ होकर श्री विष्णुधाम को चले गये और राजर्षि इन्द्रसेन भी अकण्टक राज्य का उपभोग करके अपने पुत्र को राज्य पर बिठा कर स्वयं स्वर्ग लोक को गये। इस प्रकार मैंने तुम्हारे सामने इन्दिरा व्रत के माहात्म्य का वर्णन किया है। इसको पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है॥

पेज 12 का शेष

पितरों की ..

को स्थापित करे, फिर 'ॐ शुन्धन्तां लोकाः पितृसदनाः.' का पाठकर उस अधोमुख पात्र का स्पर्श करना चाहिए। इसके बाद पितृतीर्थ से पित्रादि के आसन पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप वस्त्रयुग्म एवं यज्ञोपवीतादि देकर गोत्रनामोच्चारण पूर्वक सपतनीक पितृ, पितामह एवं प्रपितामह को 'एकानि गन्धपुष्पधूपदीपवासोयुग्मसोत्तरीययज्ञोपवीतानि वः स्वधा' इस वाक्य को पढ़कर पितृतीर्थ से जल छोड़े। 'गन्धादिदानम् अक्षयम् अस्तु' ऐसा श्राद्धकर्ता के कहने पर 'संकल्पसिद्धिरस्तु' इस प्रकार ब्राह्मण कहे। इसी प्रकार मातामहादि के लिये भी अनुज्ञापनादि कर्म करे। 'ॐ या दिव्या.' इस मत्र से भूमिका का सम्मार्जन करे। तदनन्तर घृतमिश्रित अन्न ग्रहण कर सव्य होकर 'ॐ अग्नौ करणमहंकरिष्ये' द्वारा पितृब्राह्मण की सेवा में अनुज्ञा की प्रार्थना करे। 'ॐ कुरुष्व' इस वाक्य से ब्राह्मण के द्वारा अनुज्ञात हो, 'ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा' मंत्र से पितरों के प्रतिनिधि ब्राह्मण के हाथ में दो आहुति प्रदान करे। अवशिष्ट अन्न पिण्डार्थ स्थापित करके अन्न का आधा भाग पित्रादि के पात्र में और मातामहादि के पात्र में समर्पित करे। इसके बाद जलपात्र मुद्रादि दक्षिणास्थापन पूर्वक भोजनपात्र के ऊपर कुशदान कर अधोमुख दोनों हाथों के द्वारा भोजनपात्र के ऊपर कुशदान कर अधोमुख दोनों हाथों के द्वारा भोजनपात्र स्पर्श करे। 'ॐ पृथिवी ते पात्र.' इत्यादि मंत्रपाठ पूर्वक उस पात्र को अभिमंत्रित कर उस पर अन्न परोसते हुए 'ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे.' मंत्र का पाठ करे। 'विष्णो हव्यं रक्षस्व' से अन्न के मध्य में अधोमुख अंगुष्ठ से स्पर्श करके 'ॐ अपहतासुरा रक्षांसि वेदिषदः' मंत्र से तीन बार जौ एवं 'ॐ निहन्मि सर्वं.' से पीली सरसों को विकरण करना चाहिये। तदनन्तर 'धूरिलोचनसंज्ञकेभ्यो देवेभ्य एमदन्तं सघृतं सपानीयं सव्यञ्जनं स्वाहा' कहकर विश्वेदेवों को अन्न निवेदन करते हुए उसके ऊपर सजल कुशपत्र रखकर श्राद्धकर्ता 'ॐ अन्नमिदम् अक्ष्यम् अस्तु' ऐसा उच्चारण करे एवं निमंत्रित ब्राह्मण 'ॐ सङ्कल्पसिद्धिरस्तु' इस प्रकार कहें। इसके बाद दक्षिणाभिमुख होकर दाहिने कंधे पर यज्ञोपवीत रखकर पिता, पितामह के नाम, गोत्र का उल्लेख करते हुए 'ॐ एतत्पादोदकमर्घ्यं स्वधा' इस मंत्र से पितरों के प्रतिनिधि ब्राह्मणों के चरणों में पितृतीर्थ से द्विगुण-भुग्न कुश एवं पुष्पसहित जल प्रदान करें। इसी प्रकार मातामह आदि के लिये उद्दिष्ट ब्राह्मणोंके चरणों में पादोदक और अर्घ्य समर्पित करें। इसके बाद 'ॐ एतदाचमनीयं स्वाहा' कहकर ब्राह्मणों के चरणों में पादोदक और अर्घ्य समर्पित करे। इसके बाद 'ॐ एतदाचमनीयं स्वाहा' कहकर ब्राह्मण के हाथ में जल एवं 'ॐ एष वोऽर्घ्यं' मंत्र से अर्घ्य तथा पुष्प दे। तत्पश्चात 'ॐ सिद्धमिदमासनम्' से आसन सम्पन्न है, कृपया ग्रहण करें, ऐसा निवेदन करें। 'इह सिद्धमिदमासनम्' ऐसा कहकर प्रतिनिधि ब्राह्मण प्रतिवचन दें। इसके बाद 'ॐ भूः', 'ॐ भुवः', इत्यादि सप्तव्याहृतियों का पाठकर देव-ब्राह्मण को पूर्वमुख और पितृ ब्राह्मणों को उत्तर मुख बैठकर निम्नलिखित मंत्र का तीन बार जप करें - ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एवं च।

नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव भवन्तु ते॥

तदनन्तर मास, पक्ष, तिथि, देश तथा पिता, पितामह का नाम एवं गोत्र का उच्चारण कर 'विश्वदेवपूर्वकं श्राद्धं करिष्ये' यह संकल्प करे तथा 'ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा' का उच्चारण करे। इसके बाद 'ॐ विश्वेदेवानावाहयिष्ये से प्रार्थना करके 'ॐ आवाहय' के द्वारा ब्राह्मण की आज्ञा प्राप्त होने पर 'ॐ विश्वेदेवा', 'ॐ ओषधयः' एवं आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।

ये अत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

इत्यादि मंत्रों से श्राद्धकर्ता विश्वेदेवा का आवाहन करे तथा 'ॐ अपहतासुरा रक्षांसि वेदिषदः' मंत्र का तीन बार उच्चारण कर यव बिखेरे। श्राद्धकर्ता 'ॐ पात्रमहं करिष्ये' इस वाक्य से अनुज्ञा प्राप्त करे तथा 'ॐ कुरुष्व' इससे ब्राह्मणों के द्वारा अनुज्ञात होकर अग्रभाग से युक्त दो कुश ग्रहण करे। एक प्रादेश कुश के दो पत्रों को लेकर 'ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो.' आदि मंत्रों से दूसरे कुशपत्र के द्वारा उसका छेदन करे। इसके बाद 'ॐ विष्णुर्मनसा पूतेस्थ' से उन दो कुशपत्रों का अभ्युक्षण कर दूसरे कुशपत्र के द्वारा त्रिवेष्टनपूर्वक उसे अर्घ्यपात्र में स्थापित करे। तत्पश्चात 'ॐ शं नो देवीरभिष्टय.' से उस पात्र में जल तथा 'ॐ यवोसि.' इत्यादि मंत्र से जौ एवं 'ॐ या दिव्या आपः पयसा.' इस मत्र के पाठ के साथ 'ॐ एषोर्वै नमः' से ब्राह्मणों के हाथ में अर्घ्यपात्र से जल दे। तदनन्तर श्राद्धकर्ता अर्घ्यपात्रस्थ अवशिष्ट संस्रवजल और पवित्रक को ग्रहण कर ब्राह्मण के दक्षिण पार्श्व में रखें और अर्घ्य पात्र को ऊर्ध्वमुख कुश के ऊपर स्थापित करके उसमें जल तथा पवित्रक भी रख दें। तत्पश्चात 'ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य एतानि गन्धपुष्पधूपदीपवासोयुग्मयज्ञोपवीतानि नमः' से विश्वेदेवों को गंधादि प्रदान कर समर्पित गन्ध आदि की पूर्णता की कामना गन्धादि दानमच्छिद्रमस्तु कहकर करे। विश्वेदेवों के प्रतिनिधि ब्राह्मण 'ॐ अस्तु' से समर्पित चन्दनादि की परिपूर्णता स्वीकर करे। ऋत्विक् ब्राह्मण 'ॐ अस्तु' से प्रत्युत्तर दे। श्राद्धकर्ता पितृपितामहप्रपितामहानां मातापहप्रमातामहवृद्धप्रमातापहानां सपत्नीकानां श्राद्धमहं करिष्ये ऐसा कहकर पितरों के श्राद्ध की अनुज्ञा माँगे। ब्राह्मणों के द्वारा कुरुष्व इस वाक्य से अनुज्ञात होने पर 'ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च.' मत्र का तीन बार जप करे। तदनन्तर पित्रादि एवं मातामहादि का नाम, गोत्र का उल्लेख करते हुए 'इदमासनं स्वधा' पद से ब्राह्मणों के वामपार्श्व में आसन दानकर 'ॐ पितृन् आवाहयिष्ये' से ब्राह्मणों से अनुज्ञा की प्रार्थना करे और 'ॐ आवाहय' इस वाक्य से ब्राह्मणों के द्वारा अनुज्ञात होकर 'ॐ उशन्तस्त्वा.' एवं 'ॐ आयान्तु नः पितरः .' इत्यादि मंत्रों से पितरों का आवाहन करे। 'ॐ अपहतासुरा रक्षांसि वेदिषदः' मंत्र से तिल का विकरण करे। पूर्व की भाँति क्रम से स्थापित अर्घ्यपात्र में उदक दे तथा 'ॐ तिलोसि सोमदेवत्यो.' आदि मंत्रों से तिल दान करे। इसके बाद दोनों हाथ से गन्ध, पुष्प प्रदान कर पितृपात्र को उठाकर 'ॐ या दिव्या.' इत्यादि मंत्र का पाठ करके अंत में पित्रादि का गोत्र, नाम का उल्लेख कर 'एष तेर्घ्यः स्वधा' से पावित्री के साथ अर्घ्यपात्र को ग्रहण करने के बाद वापार्श्व में कुशा के ऊपर 'ॐ पितृभ्यः स्थानामसि' मंत्र से अधोमुख अर्घ्यपात्र को स्थापित करे, फिर 'ॐ शुन्धन्तां लोकाः पितृसदनाः.' का पाठकर उस अधोमुख पात्र का स्पर्श करना चाहिए। इसके बाद पितृतीर्थ से पित्रादि के आसन पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप वस्त्रयुग्म एवं यज्ञोपवीतादि देकर गोत्रनामोच्चारण पूर्वक सपतनीक पितृ, पितामह एवं प्रपितामह को 'एकानि गन्धपुष्पधूपदीपवासोयुग्मसोत्तरीययज्ञोपवीतानि वः स्वधा' इस वाक्य को पढ़कर पितृतीर्थ से जल छोड़े। 'गन्धादिदानम् अक्ष्ययम् अस्तु' ऐसा श्राद्धकर्ता के कहने पर 'संकल्पसिद्धिरस्तु' इस प्रकार ब्राह्मण कहे। इसी प्रकार मातामहादि के लिये भी अनुज्ञापनादि कर्म करे। 'ॐ या दिव्या.' इस मत्र से भूमिका का सम्मार्जन करे। तदनन्तर घृतमिश्रित अन्न ग्रहण कर सव्य होकर 'ॐ अग्नौ करणमहं करिष्ये' द्वारा पितृब्राह्मण की सेवा में अनुज्ञा की प्रार्थना करे। 'ॐ कुरुष्व' इस वाक्य से ब्राह्मण के द्वारा अनुज्ञात हो, 'ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा' मंत्र से पितरों के प्रतिनिधि ब्राह्मण के हाथ में दो आहुति प्रदान करे। अवशिष्ट अन्न पिण्डार्थ स्थापित करके अन्न का आधा भाग पित्रादि के पात्र में और मातामहादि के पात्र में समर्पित करे। इसके बाद जलपात्र मुद्रादि दक्षिणास्थापन पूर्वक भोजनपात्र के ऊपर कुशदान कर अधोमुख दोनों हाथों के द्वारा भोजनपात्र के ऊपर कुशदान कर अधोमुख दोनों हाथों के द्वारा भोजनपात्र स्पर्श करे। 'ॐ पृथिवी ते पात्र.' इत्यादि मंत्रपाठ पूर्वक उस पात्र को अभिमंत्रित कर उस पर अन्न परोसते हुए 'ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे.' मंत्र का पाठ करे। 'विष्णो हव्यं रक्षस्व' से अन्न के मध्य में अधोमुख अंगुष्ठ से स्पर्श करके 'ॐ अपहतासुरा रक्षांसि वेदिषदः' मंत्र से तीन बार जौ एवं 'ॐ निहन्मि सर्वं.' से पीली सरसों को विकरण करना चाहिये। तदनन्तर 'धूरिलोचनसंज्ञकेभ्यो देवेभ्य एमदन्तं सघृतं सपानीयं सव्यञ्जनं स्वाहा' कहकर विश्वेदेवों को अन्न निवेदन करते हुए उसके ऊपर सजल कुशपत्र रखकर श्राद्धकर्ता 'ॐ अन्नमिदम् अक्ष्यम् अस्तु' ऐसा उच्चारण करे एवं निमंत्रित ब्राह्मण 'ॐ सङ्कल्पसिद्धिरस्तु' इस प्रकार कहें। तत्पश्चात अपसव्य होकर पित्रादि पात्र में व्यञ्जनसहित घी मिले हुए अन्न को परोसकर उसके ऊपर भूमि संलग्न कुश का स्थापन कर दोनों उत्तान हाथों से भोजनपात्र स्पर्श करते हुए 'ॐ पृथिवी ते पात्रं' मंत्र का पाठ करें। 'ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे.' एवं 'ॐ विष्णों कव्यं रक्षस्व' इन मंत्रों से समर्पित अन्न में अंगुष्ठ का स्पर्श करें। 'ॐ अपहतासुरा रक्षांसि वेदिषदः' से अन्न के ऊपर तिल फैलाकर पृथ्वी पर बायाँ घुटना टिकाकर 'अमुकगोत्रेभ्यः अस्मत् पितृपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः एतदन्नं सघृतं सपानीयं सव्यंजनं प्रतिषिद्धवर्जितं स्वधा' इत्यादि वाक्य से सपत्नीक पिता-पितामहादि का नाम-गोत्र-उच्चारणपूर्वक अन्न का निवेदन करे। अन्न का संकल्प करके 'ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं.' मंत्र से दक्षिणमुख होकर जल की धारा प्रदान करे। 'ॐ श्राद्धमिदमच्छिद्रमस्तु एवं ॐ सङ्कल्पसिद्धिरस्तु' इन दोनों मंत्रों का पाठकर 'ॐ भूर्भुवः स्वः.' इस व्याहृति मंत्र से युक्त गायत्री का उच्चारण कर विसर्जन करे। तदनन्तर 'ॐ मधुवाता.' मंत्र का पाठकर ब्राह्मणों के भोजन करते समय भक्तिपूर्वक 'सप्तव्याधा.' इत्यादि पितृस्तोत्र का पाठ करे। इसके बाद 'तृप्यस्व' इस वाक्य का उच्चारण कर दक्षिणाभिमुख अपसव्य होकर 'ॐ अग्निदग्धाश्च.' मंत्र को पढ़कर भूमि में कुश के ऊपर घी के साथ जलयुक्त अन्न को बिखेर दें। तत्पश्चात ब्राह्मणों को मुखप्रक्षालन के लिये जल देकर प्रणवपूर्वक व्याहृति के साथ गायत्री तथा 'ॐ मधुवाता.' इत्यादि मंत्रों का पाठकर मधु शब्द का तीन बार उच्चारण करे। 'ॐ रुचित भवद्भिः' यह कहकर देव-ब्राह्मणों से विनम्रभावपूर्वक भोजन के रुचिपूर्ण होने का प्रश्न करे। देव-ब्राह्मणों के द्वारा 'सुरुचितम्' यह उत्तर देने पर 'ॐ शेषमन्नम्' यह विनम्रता से प्रश्न करने पर ब्राह्मण 'ॐ इष्टै सह भोजनम्' अर्थात इष्टजनों के साथ आप भी भोजन करें- यह प्रत्युत्तर दें। तदन्नतर वामापवीती होकर पित्रादि ब्राह्मणोंसे 'ॐ तृप्ताः स्थ' यह जिज्ञासा करे और उनके द्वारा 'ॐ तृप्ताः स्मः' इस वाक्य से अनुज्ञात होकर भूमि का अभ्युक्षण और चतुष्कोण मंडल बनाकर उसमें तिल विकरित करे। 'ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितः अमुकदेवदशर्मन् सपत्नीकः एतत्ते पिण्डासनं स्वधा' ऐसा कहकर पिण्ड के लिये आसन दे और रेखाकरण करे। सप्रणव तथा व्याहृति के साथ गायत्रीमंत्र और 'ॐ मधुवाता.' आदि मंत्र का पाठकर तीन बार 'मधु' शब्द का उच्चारण करते हुए घृतयुक्त अन्न से पिण्ड का निर्माण कर 'ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितः.' इत्यादि वाक्य से कुशों के ऊपर पिता आदि के लिये पिण्ड प्रदान करे। पुनः रेखामध्य में पहले के समान पितामह को पिण्डदान तथा व्याहृतिपूर्वक गायत्री और 'मधुवाता.' का तीन बार जप करके पिण्ड के समीप में शेषान्न का विकरण करके 'ॐ लेपभुजः पितरः प्रीयन्ताम्' इस वाक्य से हाथ का मार्जन करे। प्रक्षालित पिण्डजल से 'ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितः' इत्यादि वाक्य से जल द्वारा पिण्डसेचन कर पिण्डपात्र को अधोमुख करके कृताञ्जलिपूर्वक 'ॐ पितरो मादयध्वं.' मंत्र का जप करे। तत्पश्चात जलस्पर्श करते हुए वामावर्त से उत्तमुख होकर प्राणवायु का तीन बार संयम करके 'ॐ षड्भ्य ऋतुभ्यो नमः' इस मंत्र का पाठ करे। इसके बाद वामावर्त से दक्षिणमुख होकर भोजनपात्र में पुष्प तथा 'अक्षतं चारिष्टं चास्तु.' से अक्षत दें। 'अमी मदन्तः पितरो यथाभागमवृषायिषत' इस मंत्र का पाठ करते हुए वस्त्र को शिथिलकर अंजलि बनाकर 'ॐ नमो वः पितरो नमो वः.' इस मंत्र का पाठ करें। तत्पश्चात 'गृहान्नः पितरो दत्त' इस मंत्र से गृह का निरीक्षण करे। 'सदा वः पितरों द्वेष्मः' इस मंत्र से निरीक्षणकर 'एतद्वः पितरो वासः' यह मंत्र पढ़कर 'अमुकगोत्र पितः एतत्ते वासः स्वधा' वाक्य से पिण्ड पर सूत्रदान करे। तदनन्तर बायें हाथ से उदकपात्र ग्रहण कर 'ऊर्ज वहन्ती.' मंत्र से पिण्ड के ऊपर जलधारा देकर पूर्व में स्थापित अर्घ्यपात्र के बचे हुए जल से प्रत्येक पिण्ड का सेचन करे। फिर पिण्डावाहनपूर्वक पिण्डों के ऊपर गंध और कुशदान कर 'अक्षन्नमीमदन्त.' इत्यादि मंत्र का तीन बार पाठ करे। मातामहादि के प्रतिनिधि ब्राह्मणों को आचमन कराये। 'ॐ सुप्रोक्षितमस्तु' इस वाक्य से श्राद्धभूमि का भलभाँति अभ्युक्षण कर 'अपां मध्ये स्थिता देवा सर्वमप्सु.' का उच्चारण करके 'शिवा आपः सन्तु' कहकर ब्राह्मणों के हाथ में जल दें। 'लक्ष्मीर्वसति.' आदि का पाठकर 'ॐ सौमनस्यमस्तु' यह मंत्र पढ़कर ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प समर्पित करे। इसके बाद 'अक्षतं चारिष्टं चास्तु' यह कहते हुए यव और तण्डुल भी ब्राह्मणों के हाथ में दे। तदनन्तर 'अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानामिदमन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु' इस वाक्य से पित्रादि ब्राह्मण के हाथ में तिल और जल का दान करे। ब्राह्मण 'अस्तु' कहकर प्रतिवचन बोलें। इसी क्रम में मातामह आदि को अक्षत आदि दानकर उनसे आशीर्वाद की प्रार्थना करे। तत्पश्चात् 'ॐ अघाराः पितरः सन्तु', 'गोत्रं नो वर्द्धतां.', 'दातारो नोभिवर्द्धन्तां' इत्यादि मंत्र का पाठ करे।

श्राद्धकर्ता 'सौमनस्यमस्तु' इस वाक्य का उच्चारण करे। ब्राह्मण 'अस्तु' यह करें। तदनन्तर दिये गये पिण्डों के स्थान में अर्घ्यपात्रों में पवित्रकों को छोड़ दें। बाद में कुशनिर्मित पवित्रक लेकर उससे पितरों के प्रतिनिधि ब्राह्मणों के द्वारा 'ॐ वाच्यताम्' इस वचन से अनुज्ञात हो श्राद्धकर्ता 'ॐ पितृपितामहेभ्यो यथानामशर्मभ्यः सपत्नीकेभ्यः स्वधा उच्यताम्' ऐसा कहे। तदनन्तर ब्राह्मण 'अस्तु स्वधा' का उच्चारण करे।

श्राद्धकर्ता 'अस्तु स्वधा' इस वाक्य से अनुज्ञात हो 'ऊर्जां वहन्तीरमृतं.' इस मंत्र से पिण्ड के ऊपर जल धरा दें। फिर 'ॐ विश्वेदेवा अस्मिन् यज्ञे प्रीयन्ताम्' से देव-ब्राह्मणों के हाथ में यव और जल प्रदान करे। 'ॐ प्रीयन्ताम्' इस वाक्य से ब्राह्मण द्वारा अनुज्ञात होकर 'ॐ देवताभ्यः.' मंत्र का तीन बार जप करें। अधोमुख होकर पिण्डपात्र को हिलाकर आचमनपूर्वक दक्षिणोपवीती होकर पूर्वाभिमुख 'ॐ अमुकगोत्राय अमुकदेवशर्मणेः' इत्यादि मंत्र से देव-ब्राह्मण को दक्षिणा दे। तत्पश्चात पितृ-ब्राह्मणों की सेवा में 'ॐ पिण्डाः सम्पन्नाः' यह निवेदन करने पर 'ॐ सुसम्पन्नाः' इस प्रकार ब्राह्मण से अनुज्ञात हो पिण्ड के ऊपर श्राद्धकर्ता दुग्धधारा प्रदान करे। फिर पिण्ड को हिलाकर पिण्ड के समीप रखे अर्घ्यपात्र को सीधा स्थापित करे दे। इसके बाद 'ॐ वाजे वाजे.' मंत्र से पिण्ड के अधिष्ठाता पितरों का विसर्जन करे। 'आमा वाजस्य.' आदि मंत्र से देव तथा 'अभिरम्यताम्' से पितृ-ब्राह्मण का विसर्जन करके ब्राह्मण से अनुज्ञा प्राप्तकर गौ आदि को पिण्ड प्रदान करे। इस प्रकार यहाँ श्राद्ध विधि बतलायी गयी। इसका पाठ करने मात्र से भी पाप का नाश होता है। किसी भी स्थान में उक्त विधि के अनुसार श्राद्ध करने पर पितरों को अक्षय स्वर्ग एवं ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका 200
सरल गोचर प्रवेशिका...............200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका................100
सरल वास्तु प्रवेशिका................150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका...150
ताजिक ज्योतिष......................150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल..........50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)....200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)...200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग....100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव..........100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या...100
शनि उपासना क्यों और कैसे?.....200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य...100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान.....100
शनिवार व्रत विधि व कथा............25
काल सर्प योग........................100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
भोग रोग योग..........................200
चमत्कार को नमस्कार................100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 1......100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 2 200
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 3 200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 1...125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 2 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 3 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 4 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 5 ..200
ग्रह-नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार......80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार....................30
आसनों द्वारा रोगोपचार..................30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार..............25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं....30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न..............25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार....20
तन-मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति.....25
आसनःआरोग्यता का अनुपम साधन..225
प्राणायाम 150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए..100
मानुष तन दुर्लभ अति..................30
हो कौन? जाओगे कहां? जानोगे कैसे?....100
जीवन शांत मन के साथ...............35
तनाव मुक्त जीवन......................35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा..50
लाली मेरे लाल की.....................125
समाधान...............................150
एक शाश्वत खोज......................125
मर्म की बातें (I,II,III)............ 75
कुडलिनी जागरण....................200
सफलता के सनातन सूत्र-प्रथम पुष्प....125
कार्य सफलता में बाधक तनाव 125
Living with peace of life.........35
Eternal Bliss...................150
Shedding of stress.............50
Effectuation of Shani Adoration...200
Tiny Tips 125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

शारदीय नवरात्र में बृहद् मंत्र जाप अनुष्ठान

दिनांक : 28 सितंबर से 6 अक्टूबर, 2011

समय : प्रतिदिन सायं 6:00 बजे से रात्रि 09:30 बजे तक
(दाती जी का प्रवचन एवं सामूहिक जाप-अनुष्ठान)

स्थानः श्री शनिधाम, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला ,
फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-74